

कीचड़ का काव्य



लेखक:- काका कालेलकर



लेखक परिचय— काका कालेलकर

इनका जन्म महाराष्ट्र के सतारा नगर में 1885 में हुआ। काका की मातृभूमि मराठी थी, उन्हें गुजराती हिंदी बांग्ला और अंग्रेजी का भी अच्छा ज्ञान था। गांधी जी के साथ राष्ट्रभाषा प्रचार में जुड़ने के बाद काका हिंदी में लेखन करने लगे। आजादी के बाद काका जिंदगी भर गांधी जी के विचार और साहित्य के प्रचार—प्रसार में जुड़े रहे।



पाठ में लेखक ने कीचड़ का महिमामंडन किया है ।उन्होंने बताया है कि कोई भी कवि या लेखक अपनी कृतियों में कीचड़ का वर्णन नहीं करते ,जबकि लेखक को कीचड़ में बहुत सुंदर ही नजर आता है ।कीचड़ का रंग बहुत से व्यक्तियों को पसंद आता है जैसे पुस्तक के गत्तों पर घरों की दीवारों पर मिट्टी के बर्तनों पर तथा फोटो लेते समय । कीचड़ के सौंदर्य का वर्णन करते समय लेखक ने कहा है कि जब यह नदी के किनारे सूखकर टूट जाते हैं ,उनमें दरारे पड़ जाती हैं ,तब यह सूखे हुए खोपड़े जैसे दिखाई पड़ते हैं । जब उस पर छोटे बड़े पक्षी पद चिन्ह अंकित कर देते हैं ।



तो हमें उस रास्ते का ले जाने की इच्छा होती है फिर जब कीचड़ जमीन पर जमा हो जाता है तब गाय ,भैंस, बकरी आदि के पद चिन्ह अंकित हो जाते हैं। जिसकी शोभा कुछ और ही है जब दो पाड़े अपने सींगों के द्वारा कीचड़ को रौंदकर आपस में लड़ते हैं तो उनके अंकित पैरों के निशान युद्ध का वर्णन करते हैं। अगर हमें कीचड़ के विशाल रूप तो देखना है तो गंगा किनारे या सिंधु के किनारे जाना चाहिए या फिर सीधे खंभात की पहुंचना चाहिए जहां हमारी नजर जहां तक जाएगी वहां सर्वत्र कीचड़ ही मिलेगा। लेखक के अनुसार मनुष्य को यह याद रहे कि उसका अन्न कीचड़ में ही होता है तो कीचड़ का तिरस्कार कभी ना करें हमें कीचड़ के महत्त्व को समझना चाहिए ।

कीचड़ का काव्य

